विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम **दिनांक -०२ -०६ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज मेरी माँ नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

माँ मुझे विश्वास है ..... लिखा जाएगा।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'कादम्बरी के 'मेरी माँ पाठ से अवतरित है। इसके लेखक महान देशभक्त रामप्रसाद बिस्मिल हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने अपनी माँ के प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त करते हुए अपने बलिदान पर उससे धैर्य धारण करने की प्रार्थना की है।

व्याख्या – लेखक को यह विश्वास है कि उनकी माँ मेरे भारतमाता के चरणों में बलिदान देने के कारण धैर्य धारण और गर्व का अनुभव करेगी; यह सोचकर कि पुत्र ने कुल का नाम अमर कर दिया और देशसेवा करने की प्रतिज्ञा को दृढ़तापूर्वक निबाहा। भारत के स्वाधीन होने पर जो इतिहास लिखा जाएगा, उसमें उनकी माँ का नाम भी स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

पाठ का सार

बिस्मिल की माँ ग्यारह वर्ष की उम्र में विवाहित होकर शाहजहाँपुर आई थीं। वे एक अशिक्षित ग्रामीण कन्या थीं। सास की छोटी बहन ने उन्हें गृहकार्य और भोजनादि कार्य सिखाया। बिस्मिल के जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने घर पर ही शिक्षित सहेलियों के सम्पर्क में देवनागरी की किताबें पढ़ना सीख लिया था। उन्होंने बिस्मिल और उनकी छोटी बहनों को पढ़ाना शुरू कर दिया था।

बिस्मिल के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी माता ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी यदि वे न होतीं, तो बिस्मिल एक साधारण मनुष्य की तरह संसार चक्र में फँसकर जीवन गुजारते शिक्षादि के अलावा माँ ने बिस्मिल की उनके क्रांतिकारी जीवन में वही सहायता की, जो मेजिनी की उनकी माता ने की थी। बिस्मिल की माँ का उनके लिए आदेश था कि शत्रु को कभी प्राणदण्ड मत देना। बहुत अधिक प्रेम और दृढ़ता से बिस्मिल की माँ ने उनका सुधार किया। माता की दया से वे देशसेवा में संलग्न हो सके। धार्मिक जीवन में भी उन्होंने बिस्मिल को प्रोत्साहन दिया। माँ अपनी देववाणी से प्रेम और दृढ़ता भरे शब्दों में उन्हें उपदेश देती थीं। इस प्रकार बिस्मिल की आत्मिक, धार्मिक और सामाजिक उन्नति में माँ ने सदैव सहायता की। संकट के समय में बिस्मिल को अपनी प्रेमभरी वाणी से सांत्वना देती रहती थी, जिससे वे धैर्यशील बन सके थे। बिस्मिल की इच्छा थी कि जन्म-जन्मान्तर तक परमात्मा उन्हें ऐसी

ही माता दें, जिनके चरण-कमलों को प्रणाम कर, परमात्मा का स्मरण करके वे देशसेवा में शांतिपूर्वक प्राण त्याग सकें।